7. स्वदेश-प्रेम (पं० रामनरेश त्रिपाठी)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई. में जिला जौनपुर के अंतर्गत कोइरीपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. रामनरेश त्रिपाठी के पिता का क्या नाम था?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी के पिता का नाम पं० रामदत्त त्रिपाठी था।

3. रामनरेश त्रिपाठी की शिक्षा कहाँ तक हुई?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी की शिक्षा कक्षा 9 तक हुई।

4. रामनरेश त्रिपाठी को किन-किन भाषाओं का ज्ञान था?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी को हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला एवं गुजराती भाषाओं का ज्ञान था।

5. रामनरेश किस सम्मेलन के मंत्री रहे?

उ०– रामनरेश हिंदी सहित्य सम्मेलन, प्रयाग के मंत्री रहे।

6. रामनरेश त्रिपाठी ने कैसे गीतों का संकलन किया?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी ने ग्राम गीतों का संकलन किया।

7. रामनरेश त्रिपाठी की कोई दो प्रमुख कृतियाँ बताइए।

उ०– रामनरेश त्रिपाठी की दो प्रमुख कृतियाँ— लक्ष्मी तथा प्रेमलोक हैं।

8. त्रिपाठी जी की फुटकर रचनाओं पर आधारित कृति का नाम बताइए।

उ०– त्रिपाठी जी की फुटकर रचनाओं पर आधारित कृति का नाम 'मानसी' है।

9. त्रिपाठी जी ने अपनी कृतियों में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है?

उ०– त्रिपाठी जी ने अपने कृतियों में ओज प्रधान, सरस एवं सरल खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग किया है।

10. रामनरेश त्रिपाठी का निधन कब हुआ था?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी का निधन सन् 1962 ई. में हुआ था।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता के आधार पर मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्यों को स्पष्ट कीजिए।

उ०– प्रस्तुत कविता के आधार पर कवि हमें अपनी मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्यों के पालन के लिए प्रेरित कर रहा है कि हमें ऐसी भारत-भूमि का निवासी होने का गौरव प्राप्त हुआ जो सुखों में स्वर्ग के समान है, अत: इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। जब तक हमारी साँसे चल रही हैं और हमारे हृदय में धड़कन है हमें अपने देश के गौरव को ऊँचा रखना है और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे इसके सम्मान में कमी आए। हमें देश की रक्षा करते समय मृत्यु के भय से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु व जीवन तो सृष्टि का नियम है। अपने देश से प्रेम करते हुए हमें आत्म-त्याग की भावना से पूर्ण होना चाहिए क्योंकि यह भावना ही प्रेम में प्राणों का संचार करती है। अत: देश से प्रेम, इसकी रक्षा, इसके गौरव व सम्मान को ऊँचा बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है।

2. कवि ने 'स्वदेश-प्रेम' कविता में अतीत की किन घटनाओं का उल्लेख किया है?

उ०– कवि ने 'स्वदेश-प्रेम' कविता में अतीत की उन घटनाओं का उल्लेख किया है जब हमारे पूर्वजों की कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। चंद्रमा एवं तारों के समूहों ने इसे देखा था। हमारी पूर्वजों की विजय घोषों व युद्ध गर्जनाओं को असंख्य बार यह आकाश सुन चुका है। हमारे महान् पूर्वजों को विजय गीतों से सभी दिशाएँ गूँज जाती थीं तथा जिनकी महिमा का साक्षी हिमालय आज भी है। इन कर्मठ व वीर पूर्वजों की सेवा में समुद्र भी स्वयं तत्पर रहता था तथा उनके असंख्य जहाजों को उठाकर पृथ्वी के समस्त तटों पर पहुँचाया करता था। भारत भूमि वीरों की भूमि रही है, जहाँ पर वीर पुरुषों ने अपनी मातृभूमि के लिए अनेक बार अपने प्राणों का बलिदान किया है।

3. कवि ने 'विश्राम स्थल' किसे और क्यों कहा है?

उ०– कवि ने मृत्यु को विश्राम स्थल कहा है क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुन: नवीन जीवन की यात्रा प्रारंभ करता है।

4. 'स्वदेश-प्रेम' नामक कविता से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उ०– 'स्वदेश-प्रेम' कविता के माध्यम से कवि त्रिपाठी जी भारतवासियों को अपने पूर्वजों की गौरव गाथा से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि उनके पूर्वज वीर, कर्मठ, परिश्रमी आदि गुणों से युक्त थे जिनके साक्षी चाँद, तारे व हिमालय पर्वत आदि हैं। विषुवत प्रदेश व ध्रुव प्रदेशों में रहने वाले व्यक्ति भी अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हैं, जहाँ बहुत-सी विषमताएँ हैं। वह भारतवासियों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि तुम्हें तो ऐसी भूमि प्राप्त है जो सुखों में स्वर्ग के समान है, अत: हमें इस भूमि से प्रेम व इसकी रक्षा करनी चाहिए। जब तक हमारे शरीर में साँस है हमें इसके गौरव को ऊँचा रखना चाहिए तथा इसके सम्मान के लिए नतमस्तक रहना चाहिए। कवि इस कविता के माध्यम से भारतवासियों को प्रेम, त्याग, और स्वाभिमान का संदेश देना चाहते हैं।

5. 'त्याग के बिना प्रेम निष्प्राण है।' कथन के आशय का स्पष्टीकरण कीजिए।

उ०– इस कथन का आशय है कि प्रेम त्याग माँगता है। सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों का बलिदान करना पड़े तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिए तथा प्रसन्नतापूर्वक बलिदान कर देना चाहिए क्योंकि बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत होता है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है, अत: सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए। अर्थात् सच्चे प्रेम के लिए त्याग की भावना परम आवश्यक है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. पं० रामनरेश त्रिपाठी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– पं० रामनरेश त्रिपाठी स्वदेश-प्रेम, मानव सेवा और पवित्र प्रणय के कवि हैं। आपकी रचनाओं में छायावाद का सूक्ष्म

सौंदर्य एवं आदर्शवाद का मानवीय दृष्टिकोण एक साथ घुल मिल गया है। आपके बारे में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का कथन है- ''पं० रामनरेश त्रिपाठी मननशील, विद्वान, परिश्रमी, लोक साहित्य के धनी थे। आपने अपनी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, मानव-सेवा, पवित्र प्रेम का नवीन आदर्श उत्पन्न किया।''

जीवन परिचय– सूक्ष्म सौंदर्य का चित्रण करने वाले पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म जिला जौनपुर के अंतर्गत कोईरीपुर नामक ग्राम में सन् 1889 में एक कृषक परिवार में हुआ था। आपके पिता पं० रामदत्त त्रिपाठी एक ईश्वर भक्त ब्राह्मण थे। पं० रामनरेश त्रिपाठी ने मात्र कक्षा 9 तक ही शिक्षा ग्रहण की थी। बाद में स्वाध्याय द्वारा हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य कई भाषाओं में भी निपुणता प्राप्त की। अपने साहित्य सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया। आपने हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला एवं गुजराती भाषाओं पर भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। हिंदी प्रचार के उद्देश्य से आपने 'हिंदी मंदिर' की स्थापना की। आप हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के मंत्री भी रहे। आपने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार का सराहनीय कार्य कर हिंदी की अपूर्व सेवा की। देशी रियासतों के अनेक राजा आपके मित्र थे, जिनके सहयोग से आप अपनी यात्राओं का आयोजन करते थे। आपने लगभग 20 हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा करके हजारों ग्राम गीतों का संकलन किया और अपनी कृतियों का प्रकाशन भी स्वयं ही कराया। राष्ट्रीयता, देश प्रेम, मानव सेवा, त्याग जैसे विषयों पर आपने अनेक कविताएँ लिखी हैं, जो अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। सन् 1962 ई. में आपका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय– त्रिपाठी जी एक समर्थ कवि, संपादक एवं कुशल पत्रकार थे। इनके निबंध भी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस प्रकार कवि, निबंधकार, संपादक आदि के रूप में त्रिपाठी जी सदैव याद किए जाएँगे। अपनी साहित्यिक सेवाओं द्वारा हिंदी साहित्य के सच्चे सेवक के रूप में त्रिपाठी जी प्रशंसा के पात्र हैं। देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत आपकी रचनाएँ अत्यंत प्रेरणाप्रद हैं।

2. पं० रामनरेश त्रिपाठी की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– कृतियाँ– रामनरेश त्रिपाठी का रचना संसार विविधमुखी हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, बाल साहित्य, आलोचना, जीवन चरित, काव्य आदि लिखे हैं जिनका विवरण इस प्रकार है—

उपन्यास– लक्ष्मी

नाटक– वीरांगना, प्रेमलोक

कहानी-संग्रह– सुभद्रा, स्वपनों के चित्र

आलोचना– तुलसीदास और उनकी कविता

बाल साहित्य– बालकथा, गुपचुप, बुद्धि विनोद, फूलरानी

जीवन चरित–महात्मा बुद्ध, आकाश की बातें, अशोक

लोकगीत संग्रह– ग्राम्य गीत

काव्य संकलन– मिलन, पथिक,मानसी, स्वप्न

संगृहीत काव्य– कविता कौमुदी

'मिलन', 'पथिक' एवं 'स्वप्न' आपके द्वारा रचित खंडकाव्य हैं, जबकि 'मानसी' आपकी फुटकर रचनाओं का संग्रह है, इसमें देश-प्रेम, मानव-सेवा, प्रकृति वर्णन तथा बंधुत्व की भावनाओं पर आधारित प्रेरणाप्रद कविताएँ संगृहीत हैं, इनमें पात्रों तथा कथाओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, बलिदान और त्याग के महत्व को स्पष्ट किया गया है। 'कविता कौमुदी' में उनके द्वारा संगृहीत कविताएँ हैं। इन्होंने लोकगीतों का एक संग्रह 'ग्राम्य-गीत' भी प्रकाशित कराया था।

भाषागत विशेषताएँ– त्रिपाठी जी की भाषा ओज प्रधान, सरस और सरल खड़ीबोली हिंदी है। माधुर्य गुण भी इनकी भाषा की विशेषता है। शैली अत्यधिक प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहमयी है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रप्रेम, मानवता एवं नैतिकता का चित्रण हुआ है। त्रिपाठी जी द्वारा मुख्यत: वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। आपके काव्य में द्विवेदीयुगीन नैतिकता एवं छायावादी सौंदर्य दृष्टि एक साथ देखने को मिलती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) शोभित है सर्वोच्च ..... वक्ष: स्थल पर।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'पं० रामनरेश त्रिपाठी' द्वारा रचित 'स्वप्न' खंडकाव्य से 'स्वदेश-प्रेम' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में भारत के गौरवपूर्ण अतीत की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

व्याख्या– कवि त्रिपाठी जी कहते हैं कि यह 'भारत' हमारे चिरस्मरणीय पूर्वजों का देश है। इसका मस्तक हिमालयरूपी सर्वोच्च मुकुट से सुशोभित हो रहा है, हमारे पूर्वजों के विजय-गीतों से आज तक भी संपूर्ण दिशाएँ गूँज रही हैं। ये ही तो वे पूर्वज थे, जिनकी महिमा की गवाही आज भी सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय दे रहा है अथवा जिनकी महिमा की गवाही आज भी हिमालय के रूप में प्रत्यक्ष है। इस भारत-भूमि के अति विस्तृत अथवा विशाल वक्षस्थल पर विभिन्न देशों के विमान समूह बना बनाकर उतरा करते थे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने हिमालय का महत्व व सौंदर्य का वर्णन किया है। **2.** कवि ने यहाँ अपने पूर्वजों के गुणों का गरिमापूर्वक गुणगान किया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** भावात्मक एवं वर्णनात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(ब) विषुवत् -रेखा का ..... प्राण निछावर।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने इन पंक्तियों में बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। वह उसे छोड़कर कहीं जाना पसंद नहीं करता।

व्याख्या– जो मनुष्य भूमध्य-रेखा का निवासी है, जहाँ असहनीय गर्मी पड़ती है, वहाँ वह गर्मी के कारण हाँफ-हाँफकर अपना जीवन व्यतीत करता है, फिर भी उस स्थान से लगाव के कारण वहाँ की भीषण गर्मी को छोड़कर वह शीतल प्रदेश में नहीं जाता। वह कष्ट उठाता हुआ भी अपनी मातृभूमि पर असाधारण प्रेम और अपार श्रद्धा रखता है। जो मनुष्य ध्रुव प्रदेश का रहने वाला है, जहाँ सदा बर्फ जमी रहने के कारण भयंकर सर्दी पड़ती है, वहाँ वह भयंकर ठंड से काँप-काँपकर अपना जीवन-निर्वाह कर लेता है, किंतु ठंड से घबराकर गर्म प्रदेशों में जाकर जीवन नहीं बिताता। उसे भी अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम होता है और उसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राण निछावर करने के लिए भी तत्पर रहता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने इस सत्य को प्रमाणित करने का सफल प्रयत्न किया है कि अपनी जन्मभूमि स्वर्ग से महान होती है। **2.** कवि ने उदाहरणों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि दुर्गम प्रदेशों में विषम परिस्थितियों में रहने वाले लोग भी अपनी मातृभूमि को छोड़कर सुविधाजनक स्थानों पर नहीं जाना चाहते हैं। **3.** यहाँ कवि ने उदाहरणों के द्वारा विदेशों में प्राप्त भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षित होकर विदेश जाने वाले भारतवासियों के मन में स्वदेश-प्रेम जाग्रत करने का प्रयास किया है। **4. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **5. शैली–** भावात्मक **6. रस–** वीर **7. गुण–** ओज **8. अलंकार–** अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश **9. छंद–** मात्रिक छंद।

(स) जब तक साथ ..... का भी भय।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में त्रिपाठी जी स्वाभिमान की भावना बनाए रखने पर बल दे रहे हैं।

व्याख्या– कविवर त्रिपाठी जी का कथन है कि जब तक तुम्हारी साँसे चल रही हैं और तुम्हारा हृदय धड़क रहा है, तब तक तुम्हें अपना और अपने देश का गौरव ऊँचा रखना है। अपनी पलकें, अपना सिर तथा अपना मनोबल ऊँचा रखना है; अर्थात् तुम्हें कोई ऐसा कार्य नहीं करना है, जिससे तुम्हें किसी के सामने सिर झुकाना पड़े, आँखें नीची करनी पड़ें और दीन-हीन बनना पड़े। जब तक तुम्हारे शरीर में एक बूँद भी रक्त शेष रहे, तब तक हे शत्रु को जीतने वाले भारतीयों! तुम दीन वचन नहीं बोलो और देश की रक्षा करते हुए यदि तुम्हारी मृत्यु भी हो जाए तो तुम्हें उसका भी डर नहीं होना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. स्वाभिमान की रक्षा का प्रभावशाली उपदेश देकर भारतीय नागरिकों को प्रोत्साहित किया गया है। **2.** सत्यं, शिवं, सुंदरम् पर आधारित स्वरूप भी यही है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं उपमा **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(द) निर्भय स्वागत करो ..... वस्त्र बहाकर।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में मृत्यु से भयभीत न होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– हे भारत के वीरों! तुम निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करो और मृत्यु से कभी मत डरो; क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है, अत: मानव को उससे भयभीत नहीं होना

चाहिए। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुन: नवीन जीवन की यात्रा पर अग्रसर होता है। कवि कहता है कि मृत्यु एक नदी है, जिसमें नहाकर मनुष्य जीवनभर की थकान को दूर करता है। वह उस मृत्युरूपी नदी में अपने शरीररूपी पुराने वस्त्रों को बहा देता है और पुन: दूसरे नए जीवनरूपी वस्त्र को धारण करता है। कवि का तात्पर्य है कि हमें निर्भीकता और उल्लास के साथ मृत्यु का स्वागत करना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ मृत्यु से बिना भयभीत हुए देश के लिए अपना सर्वत्र अर्पण करने की प्रेरणा दी है। **2.** जीवनरूपी मार्ग के बीच में मृत्युरूपी विश्राम गृह की कल्पना कवि की नितांत मौलिक कल्पना है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(य) सच्चा प्रेम वही ..... है विकसित।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने त्याग और बलिदान को ही सच्चे देश-प्रेम के लिए आवश्यक माना है।

व्याख्या– कवि कहता है कि सच्चे प्रेम में आत्मत्याग की भावना निहित होती है। अर्थात् आत्म-त्याग पर ही सच्चा प्रेम निर्भर होता हैं सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों को भी न्योछावर करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है; अत: सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। देशप्रेम एक पवित्र भावना है, जो निर्मल और सीमारहित त्याग से सुशोभित होती है। देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है तथा आत्मा के विकास से ही मनुष्य का विकास होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ देशप्रेम की उत्पत्ति के मूल भावों पर प्रकाश डाला गया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** उद्‌बोधन **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **7. छंद–** मात्रिक।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) गूँज रही हैं सकल दिशाएँ, जिनके जय गीतों से अब तक।।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रामनरेश त्रिपाठी भारतीयों को अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेने का संदेश देते हुए स्पष्ट करते हैं कि हमारे उन पूर्वजों के वीरता से भरे कार्यों के कारण उनके विजय के गीतों से आज सारी दिशाएँ गूँज रही हैं अर्थात् उनके वीरतापूर्ण कार्यों के कारण आज भी उन्हें सर्वत्र याद किया जाता है व सम्मान दिया जाता है।

(ब) विषुवत्-रेखा का वासी जो, जीता है निज हाँफ-हाँफ कर।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि भारतीयों को मातृभूमि के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हुए स्पष्ट करते हैं कि भूमध्य रेखा में भयंकर गर्मी पड़ती है परंतु वहाँ रहने वाले लोगों को भले ही हांफ-हांफकर जीना पड़े। वे मातृभूमि से प्रेम के कारण उसे छोड़कर नहीं जाते हैं। वे कष्ट उठाकर भी अपनी मातृभूमि पर असाधारण प्रेम और श्रद्धा रखते हैं व उसके प्रति समर्पित रहते हैं, उसी प्रकार भारतीयों को भी अपनी मातृभूमि के लिए असाधारण प्रेम व श्रद्धा से समर्पित रहना चाहिए।

(स) आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित।।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने देशप्रेम की भावना को मनुष्यता के विकास का कारण बताते हुए स्पष्ट किया है कि देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है। आत्मा के विकास से मनुष्य का विकास होता है। अत: मनुष्य को देशप्रेम की भावना का विकास करके मानवता का विकास करना चाहिए।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म किस गाँव में हुआ था?

(अ) **कोइरीपुर** (ब) कोईपुर

(स) कोशीपुर (द) कोइपुरी

2. हिंदी प्रचार के उद्देश्य से त्रिपाठी जी ने किसकी स्थापना की?

(अ) हिंदी मंच (ब) **हिंदी मंदिर**

(स) हिंदी कुंज (द) हिंदी कालेज

3. निम्न में से लोकगीत का संग्रह कौन-सा है?

(अ) भ्रमरावली (ब) गुपचुप

(स) अशोक (द) **ग्राम्य-गीत**

4. निम्न में से त्रिपाठी जी की रचना है–

(अ) गोदान (ब) **स्वप्न**

(स) मिलन (द) राष्ट्रप्रेम

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) जिनकी महिमा का है अविरल, साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।

उ०– यहाँ रूपक एवं अनुप्रास अलंकार है।

(ब) नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी, बहती हैं अब भी निशि-वासर।

उ०– यहाँ उपमा अलंकार है।

(स) फिर नूतन धारण करता है, काया-रूपी वस्त्र बहाकर।

उ०– यहाँ रूपक अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनंत तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने अपने पूर्वजों के गुणों का गरिमापूर्वक गुणगान किया है। **2. भाषा–** तत्समात्मक खड़ीबोली **3. शैली–** भावात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(ब) सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी,
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढो, उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।

उ०– काव्यगत सौंदय– 1. पूर्वजों के गौरव का यशोगान व आलंकारिक वर्णन किया गया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **3. शैली–** भावात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा एवं रूपक **7. छंद–** मात्रिक।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।